XVII/12

13 APR 1942
PASSED BY CENSOR

प्रिय पद्मकान्त,

आप का पत्र मिला, बड़ी खुशी हुई। साथ अभ्युदय के बिकने की खबर देख कर मुझे बड़े ~~[illegible]~~ दुःख हुआ। मेरे विचार आप जानते ही हैं, फिर बार बार उस विषय पर लिखना व्यर्थ है। आप जानते ही हैं कि समय किस तरह तेज़ी के साथ खराब होता आ रहा है। सरकार खुद भी समझती है कि भी उसने देश-भक्त आन्दोलन वालों को यहीं बंद कर रखना ही अपना फ़र्ज़ समझ रखा है। यह यदि सरकार समझे कि जितने देशभक्त शुरू [illegible] बंधन-मुक्त हों, तो शायद ऐसा लोग कर पाते सकेंगे। मेरे विचार [illegible] हुए भी मैं ही पेश नहीं कर सकता। जिस देश-का कल्याण जिस चीज़ में देखूँगा, उसे करने में मैं ज़रा भी कसर नहीं छोड़ूँगा। मैं तो एक आदमी ही ~~[illegible]~~! सारा [illegible] है। आप मेरी रिहाई के बारे में Mr. Howde से मिले, अच्छा ही हुआ। देखें क्या Result निकलता है। आप को जो मैंने मिलने के लिये कहा था, सिर्फ़ गलत-फ़हमी दूर करने की गरज से कहा था। यदि आप हम लोगों से [illegible] [illegible] देवी, या बसंत को भेजना है तो बहुत अच्छी हो। कोशिश करके देवी को भेजवाइये तो बड़ी ही अच्छी होगा। उसे रुपये का प्रबन्ध आप को करना पड़ेगा। [illegible] अवश्य करने की कोशिश करना। [illegible] बाबू लखनऊ गये। नरेशदत्त से [illegible] रहना और ख्याल करना। उनके रहने से मेरा भी फ़ायदा है। विशेष क्या लिखूँ। आप का विचार सरकार को मदद देने का है, वह होना चाहिये, आप की जिम्मेदारी राय है। ऐसे आज कल बहुत से लोग मान रहे हैं कि यह People's War

CENSOR

इस बार मैं कुछ टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहता। ज़्यादा इस पत्र द्वारा लिखित रहे।
यदि मुझे मौका मिला तो और कुछ भी सेवा मेरे योग्य हो गी, अवश्य करूंगा। मेरे दिल में कितनी इज्जत है, कह नहीं सकता। आप लोग चाहे जो समझें पर मैं एक इतनी ही चाहत सोचता हूं। मेरे दोस्तों से नमस्ते कहना। आशा है कि यदि कुछ गलत ख्याल रखा हो उसको माफ करेंगे। प्रणाम।

आपका ही
[illegible]

Bhal
3/4

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India